ओमशांति। अब बच्चे जानते हैं और गाया भी जाता है कि सन शोज़ फादर एण्ड (म)दर, जबकि बाप बच्चों को रचता है। जब तक रचा न है तो कब बच्चे को कैसे सिखलावे कि तुम्हारा यह माँ–बाप हैं। बच्चे यह सीखकर फादर का शो करते हैं कि हमारा फादर ऐसा है। वैसे ही फिर गाया जाता है– स्टूडेन्ट शोज़ टीचर; जबकि टीचर स्टूडेन्ट को पढ़ाते हैं तब वह शो करते हैं– फलाने बैरिस्टर ने हमको बैरिस्टर बनाया। जब तक बैरिस्टर नहीं तो स्टूडेन्ट्स शो कैसे करे! वैसे गुरु लोग भी जब फॉलोअर्स बनावे तब कहे, गुरु से यह–2 मिला। अब वह तो बाप,टीचर,गुरु अलग–2 होते हैं। हाँ, कोई फादर बच्चे को पढ़ाते भी हैं, हो सकता है; परन्तु उनमें तो सब्जेक्ट्स बहुत हैं। ऐसे तो नहीं, एक ही टीचर सब सब्जेक्ट पढ़ाते हैं। सब्जेक्ट्स के अलग–2 टीचर होते हैं। यहाँ तो एक ही बाप,टीचर,गुरु है। जब तक बच्चों को अपना न बनावे तब तक शो निकाल न सके कि हम फलाने के बच्चे हैं, उनकी मिल्कियत के हम हकदार हैं। पहले–2 तो बाप बच्चों को अपना बनाते हैं। बच्चे भी कहते हैं, हमने अपना बनाया है। बाप कहते हैं, हमने भी अपना बनाया है। बच्चे जानते हैं, फादर का शो कैसे करना है। हम हैं ईश्वर की औलाद प्रैक्टिकल में। यूँ तो ईश्वरीय औलाद हर एक समझते हैं। ''ओह गॉड फादर!'' कहते हैं। फादर कहा जाता है, मदर भी याद आती है। कहते भी हैं– तुम मात–पिता। फादर ने आकर बच्चों को समझाया है, हम तुम्हारे मात–पिता। तुम भी जान गए हो, यह बेहद के मात–पिता हैं। वह ही फादर बैठ पढ़ते(पढ़ाते) हैं, सृष्टि–चक्र के आदि–मध्य–अंत का राज़ बताते हैं। अब समझाते हैं, तो बच्चे फिर औरों को समझाते हैं– सृष्टि–चक्र ऐसे फिरता है। गाया भी जाता है, वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होती है; परन्तु यह नॉलेज तुमको मिलती है इस समय, जबकि तुम्हारी(पुरानी) दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना होती है। अभी वर्ल्ड का चक्र पूरा होता है। कलहयुग अथवा पुराना युग पूरा हो, नई दुनिया, नया युग शुरू होता है। यह नॉलेज टीचर से तुम स्टूडेन्ट को सुनाते हैं। स्टूडेन्ट फिर औरों को सुनाते हैं। वह टीचर, बाप भी है। वह है सुप्रीम बाप, बैठ समझाते हैं– नई दुनिया, नया युग था तब भारत में बरोबर देवी–देवताओं का राज्य था। नवयुग में एक ही वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी राज्य था। वह विश्व के मालिक थे। कौन? भारतवासी आदि–2। भल थे भारतखण्ड के मालिक; परन्तु बेहद विश्व के मालिक थे। कोई पार्टीशन नहीं थे। सागर,आकाश,वायु,पृथ्वी सबका एक ही भारत मालिक था। विश्व के रचता की जयंती व बर्थ भी यहाँ ही होता है। बाप कहते हैं, मैं तो पुनर्जन्म में आता नहीं हूँ। आत्मा कहती है, मैं एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। परमात्मा अगर सर्वव्यापी होता, वह तो ऐसे कहता– मैं एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ व पापआत्मा से पुण्य आत्मा हो रहा हूँ। बाप समझाते, तुम मानते भी हो मनुष्य पुनर्जन्म लेते हैं, 84 जन्म हैं। मैक्सीमम इस नॉलेज को दुनिया नहीं समझती। बाप को ही नॉलेजफुल, ब्लिसफुल कहा जाता। सारे विश्व को ब्लिस कहते(करते) हैं, सबको लिबरेट करते हैं। बाप बैठ समझाते हैं– मैं कैसे बच्चों को लिबरेट करता हूँ। मैं गाइड भी हूँ, पीसमेकर भी हूँ। यह पीस भी स्थापना करता हूँ। सॉलवैंसी भी स्थापन करता हूँ। बच्चे जानते हैं इस समय भारत में इनसॉलवैंसी है। बेहद के बाप का यह बर्थ प्लेस है; परन्तु मनुष्य समझते नहीं। शिव का सोमनाथ मंदिर भी यहाँ ही है। वहाँ यह ही शिवलिंग रखा हुआ है। बच्चों को समझाया है, परमात्मा का कोई इतना बड़ा रूप तो नहीं है, स्टार जैसा है।

अच्छा, गुरु के प्वाइंट पर समझाते हैं, गुरु के फॉलोअर्स बनते हैं। गुरु उनको शास्त्र आदि सुनाते हैं। वह फिर औरों को सुनाते हैं– गुरु ने हमको यह शास्त्र आदि सिखाए। बनारस में जाकर शास्त्र आदि सीखते, विद्युत मंडली से टाइटिल आदि ले आते हैं, जैसे– सरस्वती। अब यह सरस्वती नाम तो मम्मा का है; क्योंकि उसने बेहद की नॉलेज सुनाई है। वह तो हद के, भक्तिमार्ग के शास्त्र सीखते हैं। अब

यह तो बच्चे जानते हैं, हमारा सुप्रीम गुरु भी वह है, सुप्रीम बाप भी है। सर्वशक्तिवान बाप चाहिए न; क्योंकि माया भी कम न है, वह भी सर्वशक्तिवान है। माया भी सर्व में व्यापक है। सर्व में बाप व्यापक नहीं, वह तो पुनर्जन्म रहित है। प०पि०प० पुनर्जन्म नहीं लेता, मनुष्य लेते हैं; फिर भी परमात्मा को सर्वव्यापी कहना, कितनी ग्लानि है! जब–2 ऐसी ग्लानि करते हैं और मनुष्य पतित बन जाते हैं, तब फिर मैं आता हूँ। यह कोई शास्त्रों में थोड़े ही है कि बेहद का बाप टीचर भी है, सद्गुरु भी है, सबको पतित से पावन बनाने वाला है। बाप कहते हैं, यह सब वेद–शास्त्र आदि हैं भक्तिमार्ग। भक्तिमार्ग आधा कल्प चलता है, ज्ञानमार्ग आधा कल्प नहीं चलता। ज्ञान तो एक ही समय बाप आए समझाते हैं। एक ही बार ज्ञान प्राप्त करने से फिर तुम्हारे 21 जन्म प्रालब्ध चलती है। ऐसे नहीं कि यह नॉलेज अथवा ज्ञान आधा कल्प चलता है। यह तो समझते हो, यह नॉलेज प्रायःलोप हो जाती है। वहाँ है ही सब सद्गति वाले, उनको ज्ञान की दरकार है नहीं। इस समय ज्ञान सागर आकर बच्चों को कितना ज्ञान सुनाते हैं। बच्चे जब तक जीते रहेंगे, बाप की नॉलेज सुनते रहेंगे। बड़ी मीठी नॉलेज है। योग भी अंत तक सीखना पड़े; क्योंकि जन्म–जन्मांतर का पापों का बहुत बोझा है सिर पर। एक जन्म की बात नहीं, जन्म–जन्मांतर से आत्मा पर मैल चढ़ी है; इसलिए बिल्कुल घोर अंधियारे में आ गए हैं। जन्म–जन्मांतर की मैल रहते–2 तमोप्रधान बन जाते हैं। आत्मा में खाद पड़(ते)–2 कितने पतित बन गए हैं। आत्मा भी मुलवे की, जेवर भी मुलवे का, एकदम जड़जड़ीभूत अवस्था को पाय लिया। खास भारतवासी, जनरल सब धर्म नम्बरवार।

तुम बच्चों को फादर और मदर का शो करना है। त्वमेव माताश्च पिता कहते हैं तो फादर के साथ मदर भी चाहिए। मनुष्य समझते हैं, एडम ब्रह्मा, ईव सरस्वती। वास्तव में यह रॉंग है। निराकार गॉड फादर है तो मदर भी ज़रूर होगी; परन्तु वह लोग ईव जगदम्बा को कह देते हैं। वास्तव में, यह बहुत गुह्य बात। निराकार शिवबाबा इस ब्रह्मा के मुख से कहते हैं– तुम हमारे बच्चे हो तो यह ब्रह्मा माता बन जाती। प्रजापिता भी है। माता भी है। वह है सुप्रीम रूहानी बाप। फिर स्थूल में माता ब्रह्मा की बेटी सरस्वती कहलाते हैं। जगदम्बा का कितना भारी मेला लगता है। जगतपिता ब्रह्मा का अजमेर में इतना मेला आदि नहीं लगता, जगदम्बा का बहुत है; क्योंकि माता का प्रभाव बढ़ाना है। वह तो कहते, स्त्री का पति ही गुरु–ईश्वर है; परन्तु ऐसे है नहीं। बाप आकर कहते हैं, तुम माताओं का मर्तबा ऊँच बनाते हैं। कौरव गवर्मेन्ट भी माताओं को आगे रख रही है। विजयलक्ष्मी, प्रीमियर प्रेसिडेंट आदि भी बन सकते हैं। वह सब हैं वायोलेंस और यह है नॉन–वायोलेंस, गुप्त शक्ति सेना। वह है विनाश काले विपरीत बुद्धि बाप से। विपरीत बुद्धि बाप को सर्वव्यापी कह देते; 84 जन्म तो छोड़, 84 लाख भी छोड़, एकदम अनगिनत कह देते। पत्थर–भित्तर–ठिक्कर में भी परमात्मा को ठोक देते हैं। यह भी सब ड्रामा बना हुआ है। बच्चों को ड्रामा को बहुत अच्छी रीति बुद्धि में रखना है। यह बेहद का ड्रामा रिपीट होता रहता है। बच्चों को जिस रीति सिखलाता हूँ, फिर कल्प बाद सिखलाऊँगा। सभी ड्रामा के बंधन में बँधे हुए हैं। बाप खुद कहते हैं, मैं भी ड्रामा के बंधन में हूँ। दुःख तो भारतवासियों पर बहुत आते रहते हैं। ऐसे थोड़े ही है, घड़ी–2 अवतार लेकर छुड़ाऊँगा। मैं तो एक ही बार आता हूँ, आय कर वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी का मालिक बनाता हूँ। परमधाम से कल्प के संगम युगे–2 आता हूँ। शास्त्रों में तो बहुत उल्टा–सुल्टा है; इसलिए वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ मनी कहा जाता है। कितने शास्त्र पढ़ते हैं! कितने मंदिर बनाने में खर्चा करते हैं! खर्चा करते–2 कंगाल, ऑरफन्स बन पड़े हैं। यह भी खेल है, तुमको भूल ही जाना है। यह है भूलभुलैया का खेल। बाप आय कर अभूल बनाते हैं। अभी तुम ड्रामा के क्रियेटर,डायरैक्टर,मुख्य एक्टर को जानती हो। हद की बात सुनाते हैं, फलाना साहुकार था।

यहाँ तुम जानती हो हू इज़ हू। सृष्टि भर में सबसे साहुकार कौन? सारी सृष्टि में सबसे साहुकार ते साहुकार स्वर्ग के लक्ष्मी–नारायण हैं। ऐसा कौन आ करके बनाते हैं? बाप। बच्चे जानते हैं, हमारे जैसा भविष्य 21 जन्मों लिए सम्पत्तिवान कोई नहीं। तुम बड़ी भारी सेवा करती हो– भारत की खास, सारे विश्व की आम। तुम हो वर्ल्ड है(के) सैलवेशन आर्मी। भारत का अब बेड़ा डूबा हुआ है। यह भी है। ड्रामा समझाया जाता है। भारत का बेड़ा सैलवेज कौन करते हैं? शिव शक्तियाँ तुम सब हो। बाप कहते हैं– मैंने तुमको पावन बनाय स्वर्ग का मालिक बनाया था, माया ने पतित बनाया है। फिर तुमको महाराजा–महारानी बनाते हैं। तुम्हारा है प्रवृत्तिमार्ग, सन्यासियों का है निवृत्तिमार्ग। वह है हद का सन्यास, यह है बेहद का सन्यास। आजकल दुनिया में झूठ ..... तो बहुत है। यह है रौरव नर्क, जिसमें सभी मनुष्य बिच्छू–टिण्डन काटते रहते; इसलिए कहा जाता है– बिच्छू–टिण्डनों की आसुरी सम्प्रदाय। मनुष्य तो बिल्कुल घोर अंधियारे में पड़े हैं। घोर अंधियारे में किसने लाया? रावण आसुरी बुद्धि ने। अब ईश्वरीय बुद्धि से तुम क्या बनती हो और आसुरी बुद्धि से तुम क्या बन पड़ी हो! अब तुम कहती हो– शिवबाबा के ब्रह्मा द्वारा बच्चे बने हैं, फिर तुम दैवी बच्चे बनेंगे, फिर क्षत्रिय बच्चे, वैश्य बच्चे, शूद्र बच्चे, फिर ईश्वरीय बच्चे बनेंगे। फिर कल्प पहले भी ईश्वरीय बच्चे थे। बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है, तो श्रीमत पर चलना है। वह है विनाश काले विपरीत बुद्धि यादव और विनाश काले विपरीत बुद्धि कौरव। फिर विनाश काले प्रीत बुद्धि हो तुम पाण्डव, जिनकी ही जयजयकार होनी है। तुम हो गुप्त शिवशक्ति भारत माता। इसमें गोप–गोपियाँ दोनों हैं। नाम माताओं का करना है। माताओं को ही बहुत सताया है। द्रौपदी को नग्न किया है। कहती है– भगवान! हमें नग्न होने से बचाओ। तो बाप आय कर बचाते हैं। बहुत भारी प्रॉपर्टी मिलती है। प्रतिज्ञा करनी चाहिए– शिवबाबा, मीठा बाबा, हम आपसे वर्सा ज़रूर लेंगे। वर्सा तो शिवबाबा से लेना है न! गाते भी हैं, ईश्वर की गत–मत न्यारी है, वह ही जाने, और न जाने कोए। तुम अब जानते हो। ईश्वर की गत–मत बच्चे जानते हैं। फिर बच्चों को शो करना है। बच्चों को स्थायी सुख–शान्ति का वर्सा बाप ही देता है। अल्प काल की शान्ति कोई काम की न है। माँ–बाप कहती हो तो बच्चों को फादर–मदर का शो करना पड़े। फादर–मदर कौन हैं, सो बच्चे बैठ बताते हैं– यह मदर–फादर सारी वर्ल्ड के हैं। वह बैठ वर्सा देते हैं। बरोबर बाप से स्वर्ग का वर्सा मिला था, अब कलहयुग की अंत है, फिर ज़रूर बाप से मिलना चाहिए। सन शोज़ फादर, फादर शोज़ सन। बाप सिर्फ कहते हैं, मुझे याद करो तो तुम्हारा बोझा उतर जाए। याद का चार्ट रखना चाहिए– हम कितना समय बाप को याद करते हैं। ऐसे नहीं, हम तो शिवबाबा के संतान हैं ही; परन्तु कहते हैं– उठते,बैठते,चलते कितना याद रखते हैं, चार्ट रखो। मुख्य है याद। विघ्न भी योग में पड़ते हैं। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। वह है हठयोग। राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। वह तो बहुत किस्म–2 के योग सिखलाते हैं। उनका है हद का सन्यास, तुम्हारा है बेहद का सन्यास। प्रवृत्ति में रहते हुए बाप को इतना याद करो, फिर अंत समय औरों की याद न आए। आत्मा को एक बाप को याद करना है तब ही विकर्माजीत बन सकेंगे। विकर्माजीत और कोई बना न सके। भल करके भावना का भाड़ा अल्प काल लिए मिलता है, पतित से पावन तुम नहीं बन सकते। भक्त कितना माथा मारते, तो भी जाय न सकते। भगवान सभी भक्तों का एक ही है। वह एक ही बार आते हैं। कहते हैं, हूबहू 5000 वर्ष पहले माफिक आया हूँ। फिर से सिकीलधे बच्चों से आकर मिला हूँ। आत्मा–परमात्मा अलग रहे बहुकाल। कौन सी आत्माएँ हैं जो अलग रही हैं? इनको ही पहले आना है। अनेक धर्मों का विनाश हो, एक धर्म की स्थापना हो जाएगी। तुम फिर सतयुगी आदि सनातन देवी–देवता धर्म के बनेंगे, दूसरा कोई धर्म होगा नहीं। तो अब तुम हो सिकीलधे बच्चे, स्वदर्शनचक्रधारी। पहले सिकीलधे, फिर स्वदर्शनचक्रधारी कहेंगे। मनुष्य कहेंगे, यह तो देवताओं का टाइटिल है। देवताओं को ही यह ..... है, यह सब अपनी कल्पना ले आय हैं।

ऐसे भी कहेंगे, भूले हुए हैं। तुम जानते हो, मीठे झाड़ की सैपलिंग लगनी है। विलायत में भी यह नॉलेज देनी है– तुम्हारा हेविनली गॉड फादर कौन है? ज़रूर मदर भी होगी! बाप आए हुए हैं सुख–शांति का वर्सा देने। उससे हेल्थ और वेल्थ सब कुछ मिलता है। फिर कायदे अनुसार बाप को याद करो। कहते हैं "ओह, गॉड फादर!" तो फिर सर्वव्यापी कैसे कहते हैं! यह तो रॉंग हो जाता। वह तो कहते हैं मैं आता हूँ। आत्मा तो कहती है– हम एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हैं। परमात्मा ऐसे थोड़े ही कहेंगे। इतने झूठ बताते हैं, और फिर झूठ बोलने वालों की महिमा कितनी है! बाप आते हैं तुम बच्चों के आगे। सन्यासी भी आते हैं। वह हद के सन्यासी तुम्हारे चरणों में गिरेंगे। माता गुरु बिगर बाप का परिचय कौन देवें। माताओं पर बहुत बड़ी रिस्पॉन्सिबुलिटी है। गाँधी ने भी कितना सहन किया, जेल में गया। तुम बच्चों को भी सहन करना होता है। हाँ, माया भी तंग करती है। हर एक अपनी–2 बीमारी लिए सर्जन से मत ले सकते हैं– बाबा, इस हालत में क्या करें? कदम–2 पर मत लेने से कदम–2 में तुम्हारे पद्म हैं। एक–2 वर्शन्स लाखों रु. का है। तुम बच्चों को सृष्टि का कल्याण करना है, तब तो विश्व के मालिक बनेंगे। कल्प–2 तुम बच्चों को मालिक बनाय मैं चला जाता हूँ। अपना आप सब कुछ करके फिर अपन को छुपाय लेता हूँ। तुम कहते भी हो, सब कुछ ईश्वर का दिया हुआ है, फिर मैं लेता हूँ तो रो पड़ते हैं। भक्तिमार्ग में सब कहते हैं कि बाप ही सब कुछ देते हैं, ईश्वर का था, उसने ले लिया। यहाँ तो बच्चे ईश्वर को वारिस बनाते हैं। ईश्वर फिर बच्चों को वा(रिस) बनाते हैं। बाप कहते हैं, रिटर्न में बच्चों को इतना देता हूँ जो फिर कब लेंगे नहीं। मैं तुम बच्चों को दुःख नहीं देता हूँ। यह तो (ना)हक कलंक लगाते हैं– ईश्वर ही दुःख–सुख देता है; परन्तु नहीं, मैं तो सुख ही देने आया हूँ; जितना चाहे उतना लिओ। पुरुषार्थ हर एक को अपना करना है। जितना करेंगे उतना पावेंगे। कमाई तुम बच्चे ही करते हो। बाकी जिनको विनाशी धन का नशा रहता है वह तो सबका मिट्टी में मिल जाना है। तुम बाप से वर्सा ले भरपूर हो जाते हैं। अभी तुमको महादानी बनना है, रूहानी अविनाशी रत्नों का दान करना है। अच्छा, सिकीलधे, मीठे बच्चों को नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।